परम पावन दलाई लामा जी के 85वें जन्म दिवस पर निर्वासित तिब्बती संसद का वक्तव्य*

आज, तिब्बती पञ्चाङ्गानुसार वर्ष 2147 रब्जुङ (समय का विभाजन (60 वर्ष में), तिब्बती कैलेंडर में साठ वर्ष के चक्र को 1 वर्ष के नाम को रब्जुङ कहते हैं।) 17 लोह (धातु)-मूषक वर्ष के नोन (5वाँ मास) कृष्ण पक्ष षोडश दिन तदानुसार वर्ष 2020, 06 जुलाई को विशेष रूप से बहुत शुभ व महत्वपूर्ण दिन माना जाता है, यह दिन परम पावन चौदहवें दलाई लामा जी के जन्म दिन हैं। बौद्धधर्म के सर्वोच्च शासक, हिम देश (तिब्बत) के समस्त प्राणियों का ऐसा विश्वास है कि दलाई लामा अवलोकितेश्वर या चेनेरेज़िग का अवतार हैं जो कि करुणा के बोधिसत्त्व तथा तिब्बत के संरक्षक संत हैं। बोधिसत्त्व प्रबुद्ध सत्त्व हैं जिन्होंने अपना निर्वाण स्थगित कर मानवता की सेवा के लिये पुनः जन्म लेने का निश्चय लिया है। समस्त प्राणियों के प्रति सच्चा मैत्री, विश्वशान्ति के अग्रदूत, समस्त तिब्बती लोग के सर्वाच्च नेता वअच्छे-बुरे का पथप्रदर्शक हैं। परम पावन चौदहवें दलाई लामा जिनका सम्पूर्ण नाम से जाने तो भट्टारक मञ्जश्री वागीन्द्र सुमति ज्ञान शासनधार समुद्र श्रीभद्र हैं- के तिब्बती पञ्चाङ्गानुसार 86वाँ जन्म दिन तथा अंग्रेज़ी कैलन्डर अनुसार पूरे 85वें जन्म दिन हैं, इस मंगल दिन पर तिब्बत के जनताओं व निर्वासन में स्थित तिब्बतियों की ओर से अनगिनत टाशि देलेक अभिवादन करते हैं। साथ ही आप सहस्र वर्षों तक जीवत रहें, हम लोगों की मनोकामनायें है कि आप यूँ ही तीनों कालों में अमृतवाणी कलकल बहती नदियों के समान सदा उपदेश व दर्शन प्रदान कर अनुकम्पा बनी रहें।

हम सभी को पुनः परम पावन दलाई लामा जी का जन्म दिन मनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, सभी लोग अभिवादन करते हैं। यद्यपि वेसी ही चिरस्मरणीय हैं, आपके जीवन के उन महान कृत्यों की वर्णन नहीं कर सकता पर स्वयं को सौभाग्य समझते हुये कुछ मोटे तौर पर प्रमुख कृत्य का वर्णन करता हूँ। आप तिब्बती पञ्चाङ्गानुसार रब्जुङ 16 काष्ठ-वाराह (सूकर) नोन (5वाँ) मास शुकल पक्ष पंचमी के दिन तदानुसार वर्ष 1935, 06 जुलाई के दिन तिब्बती के उत्तर-पूर्व में, दोमेद कुम्बुम प्रान्त तग्छ़ेर नामक गाँव में उत्तम वंशज के अद्भुत लक्षण वाले के बालक के रूप में जन्म लिया। सन् 1939, 2 वर्ष के आयु होने पर पूर्वी दलाई लामा के गुप्त शक्तियाँ देवताओं-लामाओं के भविष्यवाणी से भ्रम मुक्त होकर तेरहवें दलाई लामा थुबतेन ग्याछ़ो के अवतार के रूप में पहचाना गया। उसके बाद उन्हें तिब्बत की राजधानी ल्हासा में स्वागत किया गया। तिब्बती पञ्चाङ्गानुसार धातु-ड्रुग (ड्रैगन) छु (प्रथम) मास शुकल पक्ष चतुर्दशी तदानुसार वर्ष 1940, 22फरवरी के दिन दिव्य महल पोतल में निर्भी पञ्चानन सिंह वाले स्वर्णसिंहासन पर आरुढ़ के कार्यक्रम आयोजन किया गया। इस प्रकार से, उन्होंने अतीत के महान आध्यात्मिक जीवन यात्रा आत्मकथाओं के अध्ययन में प्लावित करते हुये दसों दिशाओं में मंगल पताका लहराया गया। उसी प्रकार से, अपने मार्ग में आने वाली सभी कठिनाइयों को दूर करते हुये, साधारणासाधारण सभी मतों के बौद्ध ग्रन्थों का अध्ययन पूरा किया। तीनों महा विहार (सेरा, गंदेन,